ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक जीव

1. लोगो की पहचान अपने कुल या गोत्र से होती थी लोगो की सबसे बड़ी आस्था अपने कबिले से थी। ऋग्वेद मे कबीले के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह है "जन" जिसका प्रयोग ऋग्वेद मे 275 बार मिलता है जबकी दुसरा शब्द कबीले के लिए प्रयोग किया गया था वह था विश जिसका प्रयोग ऋग्वेद मे 170 बार मिलता है।

2. सैनिक उद्देश्यों की पुर्ती के लिए कबीला छोटे-छोटे ग्रामों मे बटा हुआ था ग्राम एव ग्राम के बीच के संघर्ष को संग्राम कहा जाता था।

3. ऋग्वेद मे परिवार के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह है गृह परिवार के अन्तर्गत न केवल माता पिता बेटा बेटी इत्यादि आते थे बालक और अन्य भी परिवार मे सम्मिलित थे।

नोट:- आर्य बोलियों मे केवल माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र एव पुत्री के लिए ही स्वतंत्र शब्द मिलते है जबकी भतीजे, प्रपोत्र, चचेरे भाई-बहन इत्यादी सभी के लिए "नप्तृ" शब्द का उल्लेख मिलता है

4. ऐसी मान्यता है कि कृषि प्रधान समाजों मे मातृत्व का महत्वपूर्ण स्थान होता है जबकी पशुचारण के बल पर जीवन यापन करने वाले समाजो मे पुरुषों का बहुत ऊचा स्थान प्राप्त होता है यही बात ऋग्वैदिक समाजों मे भी लागु होती थी और ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक समाज था इसका यह अर्थ नही लगाना चाहिए कि स्त्रीयों का आदर नही होता था। वस्तुत: स्त्रीयों का समाज मे आदरणिय स्थान था

5. पितृ प्रधान समाज होने के कारण ऋग्वेद के प्रार्थनाओं मे बार बार पुत्र प्राप्ती की लालसा दर्शायी गयी है

6. स्त्रीयों की स्थिती >

(I) ऋग्वेद के पत्नी को जायेदस्तम कहा गया है। अर्थात पत्नी ही गृह है और इससे इसके महत्व को दर्शाया गया है।

(II) समाज मे स्त्रीयों की स्थिती काफी अच्छी थी। स्त्रीयां सभा एव विदय मे भाग लेती थी वे अपने पती के साथ यज्ञ मे बैठती थी व्यस्क होने के पश्चात ही लड़कीयों की शादी की जाती थी

नोट (1) जान पड़ता है कि ऋग्वैदिक काल मे 16-17 वर्ष की आयु मे विवाह होता था।

(III) लड़कीयों का भी उपनयन संस्कार होता था।

(IV) अविवाहित लड़कीयो का भी वर्णन मिलता है जैसे घोषा जो अनेक मैत्रे की रचयीता थी अपने माता पिता के घर मे ही बीना शादी किये रहती थी

(V) विधवा विवाह एव नियोग प्रथा का भी प्रचलन था

(VI) नियोग प्रथा — अगर विवाहित स्त्री को पती बीना पुत्र पैदा किये ही मर जाता था या नपुंसक हो जाता था या पागल हो जाता था या सन्यास ग्रहणकर लेता था तो वह स्त्री तबतक अपने ~~पत्नी~~ ~~बह~~ बहनोई या देवर के साथ रहसकती थी जबतक उसे पुत्र की प्राप्ती न हो जाय।

(VII) समाज मे सामान्यतः एक पत्नी विवाही प्रचलीत था

(VIII) वहतु — कन्या के विदायी के समय उपहार एव द्रव्य इत्यादि जो दिये जाते थे उसे ही वहतु कहा जाता था।

(IX) समाज मे सती प्रथा का प्रचलन नही था, ऋग्वेद के 10वे मंडल के एक सुत से यह पता चलता है कि प्रागैतिहासिक प्रथाओ के औपचारिकताओ को पुरा करने के लिए स्त्री अपने मृत पति के साथ चीता पर लेट जाती थी फिर उसके सगे सम्बन्धि उसे उसे उठने के लिए उससे आग्रह करते थे।

(X) पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था

(XI) ऋगवेद मे घोषा, लोपा–मुद्रा, विश्ववरा इत्यादि स्त्रीयों के नाम आते है जिन्होने कुछ मैत्रो की रचना की थी अर्थात नारी शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी।

नोट: सुक्तो की रचना करने वाली 5 महिलाएं ज्ञात है बाद के ग्रंथो मे तो 20 महिलाएं का ~~व~~ उल्लेख मिलते है

(XII) स्त्रीयों के समाजिक एव धार्मिक अधिकार पुरुषो जैसे थे परन्तु दो दृष्टियों से ऋग्वैदिक समाज उन्हे अयोग्य समझता था — (क) उन्हे राजनीति मे भाग लेने का अधिकार नही था। (ख) उन्हे सम्पती सम्बन्धि अधिकार प्राप्त नही थे

(XIII) इन सबके बावजुद महिलाओं को पिता, भ्राताओ, पति एव पुत्रो पर सदैव निर्भर रहना पड़ता था।

नोट शिक्षा का मौखिक रूपसे आदान प्रदान किया जाता था लिपी का इस काल मे स्थापना नही हो पाया था शिक्षा की परम्परा इस काल मे अधिक लोकप्रिय नही थी

7. (i) ऋग्वेद के उल्लेखित वर्ण का अर्थ रंग होता है आर्य लोग गोरे थे और अनार्य लोग काले

8. (ii) ऋग्वेद के अंतीम मंडल के ब्राह्मण, राजन्य (क्षत्रीय), वैश्य एव शुद्र रूपी चतुर्थ वर्ण समाज की स्थापना की गयी है। इसमें यह बताया गया है कि इन चारो वर्णो की उत्पती आदी पुरुष ब्रह्मा के विभिन्न अंगो से हुई है वस्तुत: यह वर्ण व्यवस्था के उत्पती का दैवी स्वरूप है यदि वर्ण व्यवस्था का अर्थ उत्पादन पद्धतीद्वारा सृजित एवं ऐसे सामाजिक संरचना से लगाया जाय जिसमे पुरोहित एव कुलिन वर्गीय योद्धाओं के रूप मे ऊची श्रेणियों के लोग उत्पादन के नियंत्रणकर्ता और अधिशेष उत्पादन के संग्रह कर्ता थे तथा निम्न श्रेणी मे आने वाले किसान, कारिगार, कृषि श्रमिक इत्यादि ही उत्पादन का कार्य करते थे तो इस प्रकार का चित्र ऋग्वेद मे दृष्टिगोचर नही होता है कबायली समाजो मे प्रायः के उत्पादक तथा संग्रह कर्ता ही उसके भोक्ता भी होते है। इन समाजो मे बिचौलिये का कोई स्थान नही होता। कबीलों के समान्य लोगो के श्रम पर रहने वाले उच्च वर्गो का उल्लेख विषद स्तर पर दृष्टिगोचर नही होता। शायद ऐसे वर्ग समाज की रूप रेखा ऋग्वैदिक काल के अंतिम चरणो मे तैयार हो रही थी।

9. जब आर्य भारत मे आये तब वे तीन श्रेणीयों मे विभक्त थे - योद्धा अथवा अभिजात, पुरोहित एव समान्य जन योद्धा श्रेणी के लोगो को कबिलाई युद्ध मे सबसे अधिक लुट का माल मिला लेकिन कबिले के ब्राह्मण सदस्य को प्रारम्भ मे समान्य जन की भाँती अधिकार प्राप्त था।

10. ऋग्वेद मे "शुद्र" शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम दसवे मंडल मे मिलता है हम मानते है कि दसवा मंडल बाद मे जोड़ा गया था इस प्रकार इस काल मे मात्र तीन ही वर्ण थे।

(11.) ऋग्वैदिक काल मे वर्ण व्यवस्था कठोर नही थी उदाहरण के लिए ऋग्वेद के नवमे मंडल मे कहा गया है कि मै एक कवी हु, मेरे पिता एक राज वैद्य है, और मेरी माता चक्की चलाने का काम करती है विभिन्न पेशो के द्वारा अपना जिविकोपार्जन करके हमलोग एक ही परिवार मे रहते है इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस काल मे वर्ण व्यवस्था काफी ढीला-ढाला था

नोट (i) विभिन्न व्यवसायीक समुहो जैसे कपड़ा बुनने वाले धातुकार बढ़ई, चर्मकार इत्यादि का वर्णन मिलता है समाज मे सारथी का विशेष महत्व था।
(i) ऋग्वेद मे भिखारियो एव मजदूरी पर काम करने वाले मजदूरों का उल्लेख नही मिलता है।

12. उत्तरवैदिक कालीन समाज मे आर्थिक असमानता थी और वह भी इस संदर्भ मे की कुछ लोगो के पास धन, पालतु पशु इत्यादि अधिक थे।

Scanned with CamScanner